Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities

(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)

ISSN: 0975-9891

हिमालय में लेखन परम्परा एवं संस्कृत कवि डा0 अशोक कुमार डबराल का देवतात्मा हिमालय महाकाव्य

ललिता

संस्कृत विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, परिसर,पौडी परिसर – 246001

Manuscript Info

Manuscript History

Received: 05.05.2016
Revised: 06.07.2016
Accepted: 09.08.2016

सारांश–

प्रस्तुत शोध पत्र में हिमालय में लेखन परम्परा एवं संस्कृत कवि डा0 अशोक कुमार डबराल के देवातात्मा हिमालय महाकाव्य का वर्णन का वर्णन है। यह महाकाव्य 21 वीं सदी की रचना है तथापि इसकी पौरोणिकता आधुनिकता वस्तुशिल्प एवं प्रतिविम्बों का मानवीकरण कर चित्रण करने की शैली संस्कृत अध्याताओं को आकृष्ट करती है

कुंजी शब्द–

हिमालय, डॉ अशोक कुमार डबराल, महाकाव्य, देवातात्मा हिमालय

भारत के उत्तर में अनादिकाल से सुदृढ़ भव्य एवं उतुंग शिखरों से मुक्त हिमालय भारत की विशिष्ट संस्कृति साहित्य एवं दर्शन का प्रेरणा स्रोत रहा है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से हिमालय का सर्वाधिक महत्व रहा है।यह भारतवासियों के हदय को पवित्रता से, श्रद्वा से और ज्ञान से आकृष्ट करता आया है। बदरीनाथ, अमरनाथ, ज्योतिर्मठ, इत्यादि इसी हिमालय में स्थित है यह ऋषि मुनियो के तप एवं आध्यात्म ज्ञान की पृष्ठभूमि रहा है शिव और पार्वती की यह सुरम्य क्रीड़ा स्थली सहदयों को अविरल रुप से आनन्दित करती है।

प्रकृति में परमात्मा की पूर्णता के दर्शन करना भारतीय संस्कृति का वैशिष्ठ्य रहा है यहॉ के शान्त जलाशयों में नीलाकाश प्रतिबिम्बित होता है। घाटियों शिखरों, वनों एवं झरनों में परमात्मा के प्रतिबिम्ब का दर्शन होता है।

अठ्ठारह पुराणों के निर्माता वेदव्यास की यही साधना स्थली रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने यहां साधना करके ज्ञान की प्राप्ति की है। अनन्तकाल से हिमालय ने कितनी ज्ञान राशि विश्व को दी है और कितने ही महापुरूषों की यह साधना भूमि रही है हिमालय भारतीय संस्कृति का मूल है। हिमालय के मंद शीतल पवन एवं भव्य सौन्दर्य से दृष्टिपात् करें तो हिमालय कवियों के गुणगान से सिक्त दिख पड़ेगा। हिमालय कवियों का प्रेरणा स्रोत है। आदिकाल से हिमालय की प्रेरणा कवियों को भाव–विभोर करती रही है। वैदिक साहित्य में यत्र–तत्र हिमालय का दिव्य एवं भव्यरुप रुपायित हुआ है। ऋग्वेद का हिरण्य गर्भ ऋषि एक मंत्र द्वारा कहता है–

यस्येमें हिमदन्तो महित्वां,
यस्य समुद्र रसया सहा हूः।
यस्येमाः प्रदिषो यस्य वाहुः
करमै देवाय हविषा विद्येमं।।

ऋग्वेद के ऋषियों ने समुद्र को अपना करुण रस देने वाला (जान्हवी, यमुना) परमब्रहम को हिमालय के रुप में देखा यह एक अद्भुत साक्षात्कार है उपनिषदों में भी भव्य हिमालय यत्र तत्र चित्रित है केनोपनिषद् में एक प्रसंग है, यहा बड़ा अर्थपूर्ण और रम्य है। इन्द्र, अग्नि, वायु, वरुण आदि देवता अपने–अपने सामर्थ्य के महत्व को बखान करने लगते हैं। तब एक दिव्य यक्ष का आविर्भाव उन्हे दिंग विमूठ कर देता है। तब उमा हेमावती कहती है–

स तस्मिन्ने वाकाषे स्त्रियमाजगाम बहुषोभमानामुना
हेमवतीं ता होवाच किमेतद् यक्षभिति।

यह सभी देवताओं से परे ब्रहम है इस प्रसंग की पृष्ठभूमि स्पष्ट कहती है कि हिमालय भारतीय दर्शन के लिए किस प्रकार आध्यात्मिक पृष्ठभूमि बनकर खड़ा है। वह उपनिषद् की पृष्ठभूमि बना हिमालय आज भी हमें आध्यात्मिकता प्रदान करता है। वाल्मिकी रामायण में एक स्थान पर सीता की खोज के समय पर्वत शिखर एवं शिव का चित्रण हुआ है।

तत्र चन्द्रप्रतिकाषं पन्नगं धरणी धरम।
पद्यपत्रविषालाक्षं ततो द्रक्ष्यथ वानराः।।

कवि वाल्मिकी ने रामायण में एक स्थल पर हनुमान जी द्वारा पर्वत शिखर को उठा लाने का वर्णन किया।

स नीलामिव जीभूतं तोयपूर्ण नभस्तलात् उत्यपात।
गृहीत्वातु हनुमानशिखरं गिरें।

हिमालय की भव्यता एवं दिव्यता का दर्शन गीता में किया जा सकता है। भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते है– अहं स्थावरणां हिमालयः कि मै स्थावरों में हिमालय हूँ। स्कन्द पुराण का केदारखण्ड तो हिमालय हिमवान के प्रसंग का निरुपण करते है।

पार्वती के विवाह के समय सप्तर्षि हिमवान से कहते है कि जो अधिक समीप या अधिक दूर रहने वाला हो, अधिक धनी अथवा अत्यन्त निर्धन हो, जिसकी कोई आजीविका न हो, जो मूर्ख हो ऐसे पुरुष को कन्या देना अच्छा नही माना गया है। जो मुर्ख हो विरक्त हो अपने को बड़ा मानने वाला, रोगी तथा प्रमादी हो ऐसे पुरुष को भी कन्या नही देनी चाहिए।

अत्यासन्ने चातिदूरे अत्याढये धनवर्जिते।
वृतिहाने च मुर्ख च कन्यादानं न शस्यते।।
मूठाय च विरक्ताय आत्मसम्मावितायं च।
आतुराय प्रमताय कन्यादानं च करायेत्।।

अन्य भी स्कन्द पुराण के एक स्थल पर हिमवान द्वारा महादेव की आराधना की गयी है इसी आराधना से हिमवान समस्त पर्वतो ं में श्रेष्ठ हो गये।

1– ते धन्यास्ते महात्मानः कृते कृत्यास्त एवधि।

2– प्रत्यक्षरं येषा वै त्रिछाग्रे संस्थित सदा।

विष्णुः पुराण के द्वितीय अंश के भूगोल विवरण में हिमालय पर्वत की श्रेणियों का चित्रण हुआ है। पूर्व और पश्चिम की ओर फैले हुए गन्धमान और कैलाश ये दो पर्वत जिसके विस्तार अस्सी योजना है।

शिव पुराण में शिवपूजन विधि के प्रसंग में एक स्थल पर कैलाश शिखर का वर्णन हुआ है। जो कैलाष शिखर पर निवास करते है। पार्वती के पति है। समस्त देवताओं से उत्तम है जिनके स्वरुप का शास्त्रों में यथावत् वर्णन किया है जो निर्गुण होते हुये भी गुणरुप है।

" कैलास शिखरस्थं च पार्वतीपतिमुक्तमम्।
यथेक्तरुपिणं षम्भु निर्गुणं गुणरुपिणम्।।

वैदिक ऋषि हमारे पर्वतो का गुणगान करते हुए कहते है–

विस्तारोंच्छ्रायेणों विपुलष्चित्रसानवः।

महाभारत में हिमवत् का चित्रण हुआ है।

प्रस्थे हिमवते रस्में मालनीममितों नदीम्।
जातमुत्सृयन्त गर्भमेनका मानलीमनुः।।

अन्य भी

हिमालयामिधानोंयं ख्यातो लोकेशु पावनाः।
प्रसूतियेत्र विप्राणां श्रूयते भारतवर्ष।।

हिमालय की गाथायें श्रुतियों में मुखरीत हुई है–

श्रुति का कथनः हिमवतों हस्तीयज्ञ भागः

अर्थात ब्रहमा ने हिमवान को अपना सोम के समान यज्ञ के कुछ अपरिहार्य अगों के स्रोत होने की मान्यता देने के लिए हाथी के रुप में प्रदान किया। इस हिमालय श्रेणी की प्रशंसा में कवि शिरोमणी कालीदास ने कुमारसम्भव काव्य में हिमालय का वर्णन किया है।

अस्त्युतरस्यां दिशि देवातात्मा
हिमालयों नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौं तोयनिधि वुगाहा
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्ड।।

अन्य भी

आमेरवलां संचरतां घनानां छायामघः सानुगत निशेव्य।
उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते श्रृणाणिः यस्यातपवन्ति सिद्वा।।

रघुवंष में हिमालय का चित्रण हुआ है उन दोनो राजा हिमवन्त और रघु ने आपस में एक दूसरे के लिए राज्य भेंट लेकर राजा रघु द्वारा हिमवन्त राजा की और हिमवन्त राजा द्वारा रघु की स्तुति की गयी–

परस्परेण विज्ञास्तेषुपायन पाणिषु।
राजा हिमवतेः सारों राज्ञः सारो हिमाद्रिणाः।।

विभाण्डेष्वर माहात्म्यम के तृतीय अध्याय में हिमशिखर एवं शिव का वर्णन निरुपित है। हे महाभागा। उस समय हिमालय के शिखरो पर शिरों को रखकर नीलपर्वत पर कटि, नागार्जुन पर्वत पर दक्षिण हाथ तथा पवित्र भुवनेश्वर पहाड़ पर वाया हाथ और पुण्यकारक दारुका वन में चरणों में शिवाजी ने रखा–

शिखरेषु महाभागाः सन्निधय शिरांसि वै।
कटि कृत्वा महादेवः ज्ञुपुण्ये नीलपर्वत।।
भुजं नागार्जुनं दक्षं वामकं भुवनेष्वरे।
कृत्वा पुण्ये माहाभागाष्वरणौ दारुकावने।।

नीलकंठ दीक्षित ने अपनी कविता गंगावतार में हिमालय का दिव्य चित्रण किया है–

यदीयनीहारकणा नितस्ततः किरण।
मृगांक प्रथते सुधाकर।।
यदीयगण्डोमल एवं कष्चनः प्रयाति
कैलाष इति स्थिरं यषः।।

अर्थात चन्द्र को अपनी उपाधि सुधाकर इन पर्वत यत्र तत्र विकीर्ण करके प्राप्त होती है और जिसका हम कैलाश के रुप में स्तवन करते है वह इस पर्वत की एक शिला है। आधुनिक संस्कृत कवि डॉ0 अशोक कुमार डबराल का भी हिमालय प्रेरणा स्रोत रहा है उन्होने अपने ग्रंथ देवातात्मा हिमालय महाकाव्य में हिमालय का दिव्य एवं विषद् चित्रण किया है।

देवातात्मा हिमालय महाकाव्य जहॉ 21 वी शताब्दी में लिखा गया एक निःसन्देह विवेचन काव्य है। वही उसकी पौराणिकता भी समस्त ब्रहमाण्ड के मूर्तिमान सौन्दर्य हिमालय को अपने आप में समेटे हुए है। इस काव्य की पौराणिकता आधुनिकता, वस्तुशिल्प तथा प्रतिबिम्बों मानवी करण कर चित्रण करने की शैली इत्यादि कुछ ऐसे बिन्दु है जो संस्कृत अध्येताओं को निसन्देह आकृष्ट करते है।

इस विराट हिमगिरि में उस विराट शिव की लीला पाठको को स्वयं आष्चर्यचकित करती है।

देवातात्मा हिमालय महाकाव्य है कवि द्वारा इसमें हिमालय की गरिमा का उद्घोष है। कवि ने वैदिक एवं पौराणिक प्रमाणों के साथ हिमालय का व्यापक वर्णन किया हे। काव्य के नाम से ही अवगत होता हे। कि कवि का उद्देश्य केवल हिमालय की गौरवगाथा को वर्णित करना है ।

हिमालय महाकाव्य में महाकाव्य की समूची विषेशताऐं है। इसमें नायक हिमालय ही है जो उदान्त गुणों से पूरित है तथा धीर एवं गम्भीर है काव्य 11 सर्गो में निबद्ध हैं, काव्य की भाषा शैली सहज एवं स्वाभाविक है, विचारों के अनुसार भाषा का निर्वाह हुआ है कही–कही प्रसाद की स्निग्धता है तो कही माधुर्य का मधुर सन्निवेश है, तो कही ओज की गम्भीरता अन्तर्निहित है। कवि ने रीतियों का भी सुन्दर निर्वाह किया है, स्थान–स्थान पर वैदर्भी एवं गौड़ी रीतियां मुखरित हुई है। काव्य 'नवरसरुचिर' के अन्तर्गत है। सभी भावों का संपूर्ण निरुपण हुआ है, प्रतीकात्मकता एवं लाक्षणिकता का भी निर्वाह हुआ है। सूक्तियों के माध्यम से 'मति' भाव की अधिकता है। औचित्य का भी सफल निर्वाह हुआ हैं। अलंकार एवं छन्दो का भी सुन्दर निर्वाह हुआ है। कवि के काव्य में प्रकृति का अविराम नर्तन है कवि ने प्रकृति का आलंबन रुप उकेरा है, कवि ने हिमालय का स्पर्श धन्य माना है, हिमालय का स्पर्श उनके जीवन की सफलता है यथा–

विचारणापि ते शैलां सर्वतापप्रणाशनी
दर्शनाद् स्पर्शनाद विद्वजन्म साफल्यमेवहि।।

काव्य में यत्र तत्र प्रकृति का उद्दीप्त रुप भी वर्णित है। प्रकृति में मानवीकरण अलंकारिता तथा रहस्यात्मकता भी है। काव्य में कही पर प्रकृति उपदेशक भी है और कही पर प्रकृति पृष्ठभूमि के रुप में अवतरित हैं।

कवि द्वारा काव्य में दार्शनिकता भी प्रतिबिम्बित हुई है कवि ने कालचक्र का यथोचित्त निर्वाह देवतात्मा हिमालय महाकाव्य में किया है, देवतात्मा हिमालय कालजयी है यथा

''असार–संसार–कथा–व्यथा यथा
विलास लीला परमेष्ठिनस्थां।
युगान्तकाले हि यमालयालया

हिमालय कालजयी सदामरः।।

कवि के काव्य में सौन्दर्य पक्ष की भी प्रबलता है देवातात्मा हिमालय रचना का मानवीय स्वरुप भी सुन्दर है एवं आन्तरिक स्वरुप भी सुन्दर है देवतात्मा हिमालय मानवीय गुणो से आछन्न है एवं हिमालय तो कवि के मन का महोत्सव भी है। देवतात्मा हिमालय में यत्र तत्र प्राकृतिक सौन्दर्य की अबाध सरिता निःसृत हुई हैं।

कवि के अनुसार मानो हिमालय के अद्भुत और अद्वितीय सौन्दर्य से मोहित होकर भगवान शिव ने शान्त तपोभूमि हिमालय में निवास करना पसन्द किया कवि ने देवतात्मा हिमालय महाकाव्य में संस्कृति, पौराणिकता, पर्यावरण,स्वास्थ्य, मानवता, देशप्रेम आदि पहलुओं को भी उद्घाटित किया हैं।

काव्य का पाठन करने के उपरान्त कवि का पांडिव्य स्पष्ट होने लगता है। कवि पौराणिक ज्ञान में निष्णात् है। कवि को संस्कृत भाषा में एकाधिकार है कवि भावुक हृदयी है। तभी तो कवि कह उठते है। तुम मन में छिपी रोमांच की भावना हो। यथा

''दमित मानस दो लक्षणा विषयवीचि विवर्त विचारणा,

हुल हुलीशतधा हृदि हर्षणा त्वमसि का? निभृतापुल भावना''

कवि के मन में वंश की कीर्ति को द्विगुणित करने की अप्रतिम लालसा है। हिमालय का पवन कवि को उनके वंश की कीर्ति को बढ़ाने के लिए प्रेरणा देता है। कवि हिमालय के अनन्य भक्त हे। उनके अनुसार जिन्होने हिमालय काव्य नही देखा तो उनकी विद्वता से कुछ भी लाभ नही है यथा

''अनेकवाण्यः कतिवागविलासका भवन्तु ते ज्ञानधनास्ततोनुकिय्।
न सेविता यैः सुरभारती मुदा हिमालयो यैर्न बुधैर्विलोकितः।।

सन्दर्भ सूचीः–

1. ऋग्वेद
2. केनोपनिषद
3. वाल्मिकि रामायण
4. वाल्मिकीय रामायण
5. गीता
6. स्क0 मा0 के0 23/8/9
7. स्कन्द माह0 के0 27/22/28
8. शिव0 पु0 अ0 13–47
9. महाभारत
10. महाभारत
11. कुमारसम्भवम् प्रथमसर्ग
12. कुमारसम्भवम्
13. रघुवंश चतुर्थ सर्ग
14. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 3/17
15. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 4/5
16. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 2/8

****